सत्य से साक्षात्कार के कवि

निर्मल चन्द निर्मल

सम्पादक

सरोज गुप्ता, लक्ष्मी पाण्डेय, घनश्याम भारती

प्रिया पुस्तक सदन

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन – फोटोकापी, इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय सागर ही मान्य होगा।

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN : 978-81-924872-6-7

प्रकाशक
प्रिया पुस्तक सदन
म.नं. 119, लेन नं. 4/3, करावल नगर एक्सटेंशन
दिल्ली–110094

अक्षर संयोजन
रॉयल कम्प्यूटर्स
वन वे रोड, परकोटा, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582–244289, 9425452106

विशेष सहयोगी
श्यामलम् साहित्यिक संस्था, सागर

मूल्य – 850/–

SATYA SE SAKSHATKAR KE KAVI : NIRMALCHAND NIRMAL
edited by Saroj Gupta, Laxmi Panday, Ghanshyam Bharti

सत्य से साक्षात्कार के कवि

निर्मल चन्द निर्मल

जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजं भयम्।।
(उन पुण्यशील रस सिद्ध कवियों की जय हो,
जो अपने यशः शरीर से सदैव अजर–अमर रहते हैं।)

परामर्श

डॉ. मीना पिम्पलापुरे
प्रो. सुरेश आचार्य
श्री टीकाराम त्रिपाठी 'रूद्र'

सम्पादक

डॉ. सरोज गुप्ता
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय
डॉ. घनश्याम भारती

प्रिया पुस्तक सदन, दिल्ली

खण्ड — तीन

निकष : कृतियों की समीक्षा

1. एक पहर दिनमान शेष है : निर्मलचंद निर्मल — 333
डॉ. महेश तिवारी

2. पसीना बोलता है — 338
प्रो. प्रतिभा पाण्डेय

3. एक पहर दिनमान शेष है — 340
श्री वृन्दावन राय 'सरल'

4. गीत लिखना साधना है : कवि निर्मल — 343
डॉ. सरोज गुप्ता

5. कविता में भाषा में : निर्मल चंद 'निर्मल' — 346
डॉ. राजेन्द्र यादव

6. अपनी निर्मलता से निर्मल हैं आज तक ('गीत है ये जिन्दगी' पर एकाग्र) — 352
आशुतोष कुमार मिश्र

7. जनवादी व्यक्तित्व : श्री निर्मलचन्द निर्मल — 356
डॉ ऋषभ भारद्वाज

8. निर्मल चन्द निर्मल की रचना धर्मिता — 366
डॉ. घनश्याम भारती

9. जुगनुओं के पास भी ईमान है — 371
डॉ. छाया चौकसे

10. पसीना बोलता है — एक दृष्टि में — 375
डॉ. रंजना मिश्रा

11. निर्मल सहज अभिव्यक्ति के कवि — 379
डॉ. सरिता जैन

12. एक पहर दिनमान शेष है — 382
राजकुमार अहिरवार

13. 'गीत है ये जिन्दगी' में मानवीय मूल्यों की तलाश — 387
डॉ. अफरोज बेगम

14. 'आगे कौन बढ़े' — एक यक्ष प्रश्न — 393
डॉ. सत्या सोनी

'गीत है ये जिन्दगी' में मानवीय मूल्यों की तलाश

डॉ. अफरोज बेगम

निर्मलचन्द निर्मल एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। आप अपने काव्य में लोक मन के चितेरे और लोकजीवन के गायक के रूप में दिखायी पड़ते है। समय की माँग के अनुसार ही आपने अपनी लेखनी को पैनी धार दिया और समाज की समस्याओं और उसके निराकरण हेतु आपने अपनी कविताओं में ऐसे विषयों का चयन किया, जिसमें लोक कल्याण, लोक मंगल का भाव समाहित है। आपकी सोलह कृतियाँ प्रकाशित हैं–'उठाओ कुदाली', 'और कुछ नहीं हुआ', 'याद नहीं बिसरी', 'जुगनुओं के पास भी ईमान हैं', 'पसीना बोलता हैं', 'द्रवणांक', गुड़िया पूछ रही है मम्मी से, 'प्रेम रुपी रंग कितने', 'आगे कौन बढ़े', 'प्रीत के सुख–दुख घनेरे', 'मील के पत्थर', 'नहीं कोई', 'एक प्रहर दिनमान शेष है', 'निर्मल सतसई' आदि।

'गीत है ये जिन्दगी' आपका चौथा काव्य–संग्रह है, जो सन 1999 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में जो कविताएँ हैं, वे गीत–विधा, गजलें, दोहे और मुक्त छन्द विधा में अलग–अलग भाव–भंगिमा से परिपूर्ण कविताएँ हैं इस काव्य संग्रह में रचनाकार ने एकदम तटस्थ होकर वर्तमान समाज की समस्याओं से रू–ब–रू कराया है। आपने गीत है ये जिदंगी में भ्रष्ट राजनीति, गन्दी मानसिक कुचक्र, साहित्यकारों की कविता के प्रति बदलती सोच, भाषाई लड़ाई, मानवीय–मूल्यों में आयी गिरावट जैसे ज्वलंत मुद्दों पर गहराई से विचार कर अपनी लेखनी के माध्यम से इन मुद्दों का निराकरण करने का लगातार प्रयास किया है।

'गीत है ये जिन्दगी' काव्य संग्रह में आपने कुल 42 कविताएँ लिखी हैं। जो इस प्रकार है – 'कुछ कही कुछ अनकही', 'जीतना चाहे जहाँ को', 'कभी तेरा नहीं होता', 'हर सिम्त उजाला होगा', 'हमारी शामत आई है', 'गीत है ये जिन्दगी', 'सच्चाईयाँ रह जायेगी', 'चादर में निर्मल समाया नहीं', 'प्यासे न जायेंगे', 'सच्चाईयों का कहाँ अब चलन है', 'अच्छा नहीं किया',